शान्ति का सन्देश और एक चेतावनी

लेखक

हज़रत हाफ़िज़ मिर्ज़ा नासिर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय[रह.]

शान्ति का सन्देश
और
एक चेतावनी

लेखक

हज़रत हाफ़िज़ मिर्ज़ा नासिर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय[रह.]

नाम पुस्तक - शान्ति का सन्देश और एक चेतावनी

Name of Book : Shanti Ka Sandesh Aur Ek Chetavani

लेखक - हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद[रह.]

जमाअत अहमदिया के तृतीय ख़लीफ़ा

Written By : Hazrat Mirza Nasir Ahmad[rt]

khalifatul Masih-III[rd]

अनुवादक - अन्सार अहमद एम.ए. बी.एड. आनर्स इन अरबिक

Translated By : Ansar Ahmad M.A. B. Ed.

Hon's in Arabic

प्रथम प्रकाशन वर्ष - मई 2017

First Edition : May 2017

संख्या - 1000

Quantity : 1000

मुद्रक - फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान

Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,

Qadian,

प्रकाशक - नज़ारत नश्र व इशाअत, क़ादियान

Publisher : Nazarat Nashr-o-Ishaat,

Qadian 143516

Distt. Gurdaspur (Punjab)

INDIA

हज़रत हाफ़िज़ मिर्ज़ा नासिर अहमद[रह.] जमाअत अहमदिया के तृतीय ख़लीफ़ा के अंग्रेज़ी भाषण का हिन्दी अनुवाद जो आपने अपने यूरोप के टूर के मध्य दिनांक 28 जुलाई 1967 ई. को वांडज़वर्थ टाउन हाल लन्दन में दिया था जिसमें समस्त विश्व विशेषतः यूरोप के रहने वालों के लिए एक महत्त्वपूर्ण सन्देश है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

अश्हदो अल्ला इलाहा इल्लल्लाहो वहदहू ला शरीक लहू व अश्हदो

अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू

अम्मा बअद फ़अऊज़ुबिल्लाहे मिनश्शैतानिर्रजीम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔
اِيَّاکَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاکَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ
الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

अहमदिया जमाअत के इमाम होने के नाते मुझे एक आध्यात्मिक पद पर आसीन होने का सौभाग्य प्राप्त है। इस दृष्टि से मुझ पर कुछ ऐसे दायित्व आ जाते हैं जिनकी मैं अन्तिम सांस तक उपेक्षा नहीं कर सकता। मेरे इन दायित्वों का क्षेत्र समस्त मानव जाति तक फैला हुआ है तथा इस भ्रातृत्व भावना की दृष्टि से मुझे प्रत्येक मनुष्य से प्रेम है।

आदरणीय सज्जनो ! मानवता इस समय एक भयानक विनाश के कगार पर खड़ी है। इस सन्दर्भ में मैं आप के लिए तथा अपने समस्त भाइयों के लिए **एक महत्त्वपूर्ण सन्देश लाया हूं**। अवसर की अनुकूलता की दृष्टि से मैं इसे संक्षिप्त रूप में वर्णन करने का प्रयास करूंगा।

मेरा यह सन्देश मानवता के लिए शान्ति और मैत्री का सन्देश है तथा मैं आशा रखता हूं कि आप मेरी इन संक्षिप्त बातों को ध्यानपूर्वक

सुनेंगे, तथा फिर एक पक्षपातरहित हृदय एवं सद्बुद्धि के साथ उन पर विचार करेंगे।

मैं आपको बताना चाहता हूं कि 1835 ई. मानव इतिहास में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण वर्ष था, क्योंकि इस वर्ष उत्तरी भारत के एक अप्रसिद्ध और अज्ञात गांव क़ादियान में एक ऐसे वंश में जो एक समय तक उस क्षेत्र का राजसी वंश रहने के बावजूद राजसी वैभव एवं ऐश्वर्य खो बैठा था, एक ऐसे बालक का जन्म हुआ जिसके लिए मुक़द्दर (प्रारब्ध) था कि वह न केवल आध्यात्मिक जगत में अपितु भौतिक जगत में भी एक क्रान्ति को जन्म दे। उस बालक का नाम उसके माता-पिता ने मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद रखा और बाद में वह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के नाम तथा मसीह व महदी की ख़ुदादाद उपाधियों से प्रसिद्ध हुआ (उस पर सलामती हो)। परन्तु इस से पूर्व कि मैं उस आध्यात्मिक तथा भौतिक महान क्रान्ति पर प्रकाश डालूं, मैं आप के जीवन-चरित्र को नितान्त संक्षिप्त शब्दों में प्रस्तुत करना चाहता हूं।

ऐतिहासिक छान-बीन से ज्ञात होता है कि आप का जन्म 13 फ़रवरी 1835 ई. को हुआ तथा जिस युग में आप का जन्म हुआ वह युग अत्यंत अज्ञानता का युग था तथा लोगों का शिक्षा की ओर बहुत कम ध्यान था, यहां तक कि यदि किसी के नाम कोई पत्र आता तो उसको पढ़वाने के लिए उसे कठिन परिश्रम तथा कष्ट सहन करना पड़ता और कई बार तो ऐसा भी होता कि एक लम्बे समय तक पत्र पढ़ने वाला कोई न मिलता।

अज्ञानता के उस युग में आप के पिता जी ने कुछ साधारण पढ़े-

लिखे शिक्षक आप की शिक्षा के लिए नियुक्त किए जिन्होंने आपको पवित्र क़ुर्आन पढ़ना सिखाया। परन्तु वे इस योग्य न थे कि क़ुर्आन के ज्ञानों तथा आध्यात्मिक रहस्यों की प्रारंभिक शिक्षा भी आप को दे सकते। इसके अतिरिक्त इन शिक्षकों ने आपको अरबी और फारसी की प्रारंभिक शिक्षा दी जिसका परिणाम यह हुआ कि आप को अरबी और फारसी पढ़नी आ गई। इससे अधिक आप ने शिक्षकों से कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की, सिवाए औषधि विज्ञान की कुछ पुस्तकों के जो आप ने अपने पिता जी से पढ़ीं जो उस युग में एक प्रसिद्ध वैद्य थे।

यह थी वह सम्पूर्ण शिक्षा जो आपने पढ़कर प्राप्त की। इस में सन्देह नहीं कि आप को अध्ययन की बहुत रुचि थी तथा आप अपने पिता जी की लायब्रेरी में अध्ययन करने में बहुत व्यस्त रहते थे किन्तु चूंकि उस युग में विद्या का विशेष महत्त्व न था तथा आप के पिता जी की इच्छा थी कि वह सांसारिक कार्यों में उनका साथ दें तथा सांसारिक समृद्धि प्राप्त करने में और संसार में सम्मानपूर्वक रहने का ढंग सीखें। इसलिए आप के पिता जी आप को पुस्तकों का अध्ययन करने से हमेशा रोकते रहते थे और कहते थे कि अधिक पढ़ने से तुम्हारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

स्पष्ट है कि इतनी साधारण शिक्षा का स्वामी वह महान कार्य कदापि नहीं कर सकता था जो अल्लाह तआला आप से लेना चाहता था। इसलिए ख़ुदा स्वयं आप का शिक्षक और अध्यापक बना और उसने स्वयं आप को क़ुर्आन के ज्ञान तथा आध्यात्मिक रहस्यों एवं सांसारिक विद्याओं के आधारभूत सिद्धान्त सिखाए तथा उसके मस्तिष्क को अपने प्रकाश से प्रकाशित किया तथा उसे क़लम का साम्राज्य

एवं वर्णन का सौन्दर्य तथा माधुर्य प्रदान किया और उसके हाथ से अनेकों अद्वितीय पुस्तकों की रचना कराई तथा बीसियों मधुर भाषण कराए जो ज्ञान एवं अध्यात्म ज्ञान के ख़ज़ानों से भरपूर हैं।

1835 ई. का वर्ष इतना महत्त्वपूर्ण तथा इस वर्ष जन्म लेने वाला बालक इतना महान था कि पूर्वकालीन ग्रन्थों में उस के जन्म की सूचना दी गई थी। इस बारे में मैं केवल एक भविष्यवाणी बताना चाहता हूं और वह भविष्यवाणी हज़रत ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की है जो आप[स.] ने उस बालक के संबंध में लगभग 1300 वर्ष पूर्व की थी और वह यह है, आपने फ़रमाया :-

اِنَّ لِمَهْدِيِّنا اٰيَتَيْنِ لَمْ تَكُوْنا مُنذُ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ تَنْكَسِفُ الْقَمَرُ لِاَوَّلِ لَيْلَةٍ مِّنْ رَمَضَانَ وَ تَنْكَسِفُ الشَّمْسُ فِى النِّصْفِ مِنْهُ وَلَمْ تَكُوْنَا مُنْذُ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

(दार-ए-क़ुतनी भाग-प्रथम, पृष्ठ-188, लेखक - हज़रत अली बिन उमर बिन अहमद अद्दार क़ुतनी अन्सारी प्रेस से प्रकाशित)

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी की थी कि इस्लाम धर्म में बहुत से झूठे दावेदार खड़े होंगे जो यह दावा करेंगे कि वे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार महदी हैं हालांकि वे महदी न होंगे। महदी होने का सच्चा दावेदार वह होगा जिसकी सच्चाई के प्रमाण के लिए आकाश दो निशान प्रकट करेगा अर्थात् चन्द्रमा एवं सूर्य उसकी सच्चाई पर साक्षी ठहरेंगे इस प्रकार कि रमज़ान के महीने में चन्द्र-ग्रहण की रातों में से प्रथम रात को अर्थात् तेरहवीं तिथि को चन्द्र ग्रहण होगा तथा

उसी रमज़ान में सूर्य-ग्रहण के दिनों में से मध्य वाले दिन अर्थात् 28 रमज़ान को सूर्य ग्रहण होगा। महीनों में से रमज़ान के महीने का निर्धारण करना तथा चन्द्र ग्रहण के लिए प्रथम रात का निर्धारण करना एवं सूर्य के लिए मध्य दिन को निर्धारित करना एक असाधारण निर्धारण है जो मानव-शक्ति, ज्ञान एवं बोध से ऊपर है।

अतः जब समय आया तो एक दावेदार का वास्तव में प्रादुर्भाव हुआ तथा घोषणा की कि मैं महदी हूं और उस घोषणा के प्रमाण के तौर पर दोनों निशान अर्थात् चन्द्र तथा सूर्य-ग्रहण जिस प्रकार कि भविष्यवाणी में बताए गए थे प्रकट हुए। अतः यह एक असाधारण एवं चमत्कारपूर्ण भविष्यवाणी थी जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने महदी के लिए की थी और जैसा कि घटनाओं ने सिद्ध किया कि यह भविष्यवाणी घटित होने से लगभग 1300 वर्ष पूर्व की गई थी, यह भविष्यवाणी मानव-बुद्धि, अनुमान तथा ज्ञान से ऊपर है।

फिर यह भविष्यवाणी इस प्रकार पूरी हुई कि वह महान बालक जो 1835 ई. में पैदा हुआ था, उसने ख़ुदा तआला से ज्ञान पाकर सन् 1891 ई. में संसार में यह घोषणा की कि वह वही मौऊद महदी है जिसका वादा किया गया था तथा अपने दावे की सच्चाई के प्रमाण हेतु हज़ारों बौद्धिक एवं शास्त्रीय तर्क तथा आकाशीय समर्थन और अपनी भविष्यवाणियां, जिन में बहुत सी उस के युग में पूर्ण हो चुकी थीं तथा बहुत थीं जिनके पूर्ण होने का समय भी भविष्य में आने वाला था, संसार के समक्ष प्रस्तुत कीं किन्तु तत्कालीन विद्वानों ने उसके दावे को झुठला दिया तथा इन्कार का एक कारण यह भी

वर्णन किया कि महदी के लिए तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रमज़ान की निर्धारित तिथियों में चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण निशान के तौर पर वर्णन किया था, क्योंकि उस भविष्यवाणी के अनुसार चन्द्र तथा सूर्य को ग्रहण नहीं लगा। इस से सिद्ध हुआ कि आप अपने दावे में सच्चे नहीं। किन्तु वह शक्तिमान ख़ुदा जो अपने वादे का सच्चा तथा अपने निष्कपट बन्दों के साथ वफादारी एवं प्रेम का व्यवहार करने वाला है उसने ठीक अपने वादे तथा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार सन् 1894 ई. के रमज़ान के महीने में निर्धारित तिथियों में चन्द्र और सूर्य को ग्रहण की अवस्था में करके संसार पर यह सिद्ध कर दिया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़ुदा और दोनों लोकों का प्रतिपालक बड़ी श्रेष्ठता, प्रताप एवं शक्तियों वाला है। न केवल एक बार अपितु यही निशान रमज़ान ही के महीने में तथा ठीक उन्हीं निर्धारित तिथियों में 1895 ई. में दूसरे गोलार्द्ध को दिखाया ताकि पूर्व और पश्चिम तथा पुरानी और नयी दुनिया के बसने वाले अल्लाह तआला की श्रेष्ठता, शक्ति एवं हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तथा आपके आध्यात्मिक पुत्र हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब की सच्चाई के साक्षी ठहरें। अतः महान है मुहम्मद (स.अ.व.) जिसने अपने ख़ुदा से ज्ञान पाकर यह चमत्कारपूर्ण भविष्यवाणी की तथा महान है आप का वह आध्यात्मिक पुत्र जिसके पक्ष में वह पूरी हुई।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात् हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के युग तक यद्यपि कई लोग पैदा

हुए जिन्होंने महदी होने का दावा किया किन्तु उनमें से हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के अतिरिक्त कोई भी ऐसा नहीं था जिसके महदी होने की सच्चाई पर चन्द्र और सूर्य साक्षी बने हों। यह एक बात ही इस बात के लिए पर्याप्त है कि आप शान्त हृदय तथा गंभीर चिन्तन से इस दावेदार के दावे पर विचार करें जिनका सन्देश मैं आज आप तक पहुंचा रहा हूं तथा जिसकी श्रेष्ठता एवं सच्चाई के प्रमाण स्वरूप चन्द्र एवं सूर्य साक्षी बन कर खड़े हैं।

सूर्य तथा चन्द्रमा की साक्ष्य तो मैं वर्णन कर चुका। अब आइए पृथ्वी की पुकार सुनें, वह क्या कहती है। हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद व महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव के कारण तथा आप की सच्चाई के प्रमाण में पृथ्वी पर एक आश्चर्यजनक तथा मानव बुद्धि को चकित कर देने वाली भौतिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति का आना निश्चित था।

वास्तव में समस्त क्रान्तियां तथा समस्त ऐतिहासिक परिवर्तन इसी एक क्रान्ति की श्रृंखला की विभिन्न कड़ियां हैं जो आपके संसार में प्रादुर्भाव होने के साथ आरंभ हुई थीं तथा जो आपकी सच्चाई के प्रमाण के तौर पर साक्षी हैं। इसके अतिरिक्त यह समस्त क्रान्तियां तथा मानव-इतिहास के सभी महत्त्वपूर्ण मोड़ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद की भविष्यवाणियों के अनुसार हैं।

आप के दावे के समय सभ्य एवं विजेता पश्चिमी शक्तियों के समक्ष किसी पूर्वी शक्ति का कोई अस्तित्व न था किन्तु सन् 1904 ई. में आपने संसार को यह बताया कि निकट भविष्य में सभ्य एवं

विजेता पश्चिमी शक्तियों के विरोधी के रूप में संसार के क्षितिज पर ऐसी पूर्वी शक्तियां उभरने वाली हैं जिनकी शक्ति का लोहा पश्चिमी शक्तियों को भी स्वीकार करना पड़ेगा। अतः शीघ्र ही उसके पश्चात् रूस एवं जापान के युद्ध में जापान ने विजय प्राप्त की और वह एक पूर्वी शक्ति के रूप में संसार के क्षितिज पर प्रकट हुआ।

फिर द्वितीय विश्व युद्ध में जब जापान को पराजय का मुख देखना पड़ा तो चीन एक पूर्वी शक्ति के रूप में संसार के क्षितिज पर अपने सम्पूर्ण पूर्वी अस्तित्व एवं शक्ति के साथ प्रकट हुआ तथा मानव-इतिहास में इन दो शक्तियों के उद्‌भव एवं विकास के साथ एक नया मोड़ आया जिनके प्रभाव मानव-इतिहास में इतने व्यापक तथा महत्त्वपूर्ण हैं कि कोई व्यक्ति इनका इन्कार नहीं कर सकता। यह जो कुछ हुआ ख़ुदा तआला की इच्छा तथा हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के बिल्कुल अनुकूल हुआ।

हमारे युग की दूसरी महत्त्वपूर्ण घटना जिससे लगभग सम्पूर्ण संसार किसी न किसी रूप में प्रभावित हुआ है। रूस के ज़ार तथा साम्राज्यवाद का पूर्णतया विनाश एवं बरबादी तथा साम्यवाद का विजयी होकर सत्ताधारी बनना है। रूसी क्रान्ति की महान घटना जिसने विश्व-इतिहास को एक विशेष दिशा की ओर मोड़ दिया है, भी सर्वथा आपकी भविष्यवाणी के अनुसार घटित हुई। आप ने सन् 1905 ई. में रूस के ज़ार तथा राजसी ख़ानदान तथा साम्राज्यवाद का पूर्णतया विनाश तथा दुर्दशा की सूचना दी थी। यह आश्चर्यजनक संयोग है कि उसी वर्ष भविष्यवाणी के कुछ ही माह पश्चात् वह राजनैतिक पार्टी अस्तित्व में आई जो लगभग बारह-तेरह वर्ष के पश्चात् राजसी

ख़ानदान तथा साम्राज्यवाद के विनाश का कारण बनी। तत्पश्चात् साम्यवाद ने प्रथम रूस में और फिर विश्व के अन्य देशों में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। यह एक ऐसी स्पष्ट बात है जिसके वर्णन करने की आवश्यकता नहीं।

रूस के "ज़ार" का विनाश तथा साम्यवाद की विजय मानव-इतिहास की नितान्त दुखद एवं महत्त्वपूर्ण घटना है जिसके पढ़ने से यद्यपि हृदय में पीड़ा तो पैदा होती है किन्तु उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। संसार में कोई राष्ट्र भी आपके राष्ट्र सहित उसके प्रभाव से बच नहीं सका। किन्तु हमारे लिए इन परिवर्तनों पर आश्चर्य करने या गहरी चिन्ता करने का कोई कारण नहीं क्योंकि इन परिवर्तनों की दिशा, गति तथा तीव्रता के विषय में हमें मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पहले ही सूचनाएं दे दी थीं तथा भविष्य में अपने समय पर यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि ये परिवर्तन किस प्रकार ख़ुदा की इच्छा-पूर्ति में सहायक सिद्ध हुए। हमें बताया गया था कि मसीह मौऊद तथा महदी माहूद के युग में दो शक्तियां ऐसी उभरेंगी कि विश्व उन में विभाजित हो जाएगा तथा कोई अन्य शक्ति उनका मुकाबला न कर सकेगी। पुनः वे शक्तियां एक दूसरे के विरुद्ध अपने विनाश के साधन स्वयं पैदा करेंगी।

किन्तु केवल इस एक युद्ध के विषय में ही भविष्यवाणी नहीं थी अपितु अहमदिया जमाअत के प्रवर्तक ने पांच अन्तर्राष्ट्रीय विनाशों की सूचना दी है।

प्रथम विश्वयुद्ध के विषय में आप ने कहा था कि विश्व अत्यन्त व्याकुल हो उठेगा, यात्रियों के लिए वह समय अत्यन्त कष्टदायक

होगा, नदियां रक्त से लाल हो जाएंगी, यह आपदा सहसा और अचानक आएगी, इस आघात से जवान बूढ़े हो जाएंगे, पर्वतों को उनके स्थान से उड़ा दिया जाएगा, बहुत से लोग इस विनाशलीला की विभीषिका के कारण पागल हो जाएंगे। यही समय रूस के ज़ार के विनाश का होगा। उस समय विश्व में साम्यवाद का बीजारोपण होगा, युद्ध के बेड़े तैयार रखे जाएंगे तथा भयंकर समुद्री युद्ध किए जाएंगे, सरकारों का तख़्ता उलट दिया जाएगा, शहर शमशान में परिवर्तित हो जाएंगे।

इस विनाश के पश्चात् एक और विश्वव्यापी विनाश आएगा जो इस से अधिक विशाल होगा तथा इससे अधिक भयानक परिणामों का कारण बनेगा। वह विश्व का रूप एक बार पुनः बदल देगा तथा क़ौमों के भाग्य को नया रूप देगा, साम्यवाद अत्यधिक शक्तिशाली हो जाएगा तथा उसमें अपनी इच्छा स्वीकार कराने की शक्ति पैदा हो जाएगी और वह संसार के विशाल क्षेत्र में छा जाएगा।

अतः ऐसा ही हुआ। पूर्वी यूरोप के अधिकांश भाग साम्यवादी हो गए तथा चीन के सत्तर करोड़ नागरिक भी इसी मार्ग पर चल पड़े। एशिया तथा अफ्रीका की उभरती हुई क़ौमों में साम्यवाद (Communism) का प्रभाव अधिक बढ़ गया। विश्व दो विरोधी गुटों में विभाजित हो गया, जिनमें से प्रत्येक आधुनिकतम हथियारों से सुसज्जित होकर इस बात के लिए तैयार है कि मानवता को विनाश की भड़कती हुई नर्काग्नि में धकेल दे।

पुनः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक तृतीय महायुद्ध की भी सूचना दी है जो पहले दोनों महायुद्धों से अधिक विनाशकारी

होगा। दोनों विरोधी गुट इस प्रकार सहसा टकराएंगे कि प्रत्येक व्यक्ति हतप्रभ रह जाएगा, आकाश से मृत्यु और विनाश की वर्षा होगी तथा भयंकर शोले पृथ्वी को अपनी लपेट में ले लेंगे, नवीन सभ्यता का महान दुर्ग पृथ्वी पर आ गिरेगा। दोनों विरोधी गुट अर्थात् रूस तथा उसके सहयोगी, अमरीका और उसके सहयोगी दोनों गुट तबाह हो जाएंगे, उनकी शक्ति टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी, उनकी सभ्यता एवं संस्कृति तथा उनकी व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाएगी, शेष रह जाने वाले लोग चकित होकर हतप्रभ रह जाएंगे।

रूस के निवासी अपेक्षाकृत इस विनाश से शीघ्र मुक्ति पाएंगे। यह भविष्यवाणी अत्यन्त स्पष्ट रूप से की गई है कि इस देश की जनसंख्या पुनः शीघ्र ही बढ़ जाएगी और वह अपने स्रष्टा की ओर ध्यान देगी और उनमें बड़ी तीव्र गति से इस्लाम फैलेगा और वह क़ौम जो पृथ्वी से ख़ुदा का नाम तथा आकाश से उसका अस्तित्व मिटाने की शेखियां बघार रही है, उसी जाति को अपनी पथभ्रष्टता का ज्ञान हो जाएगा तथा वह इस्लाम स्वीकार करके ख़ुदा तआला के एकेश्वरवाद पर दृढ़ता से स्थापित हो जाएगी।

शायद आप इसे एक मनघड़ंत बात समझें, किन्तु जो इस तृतीय विश्व युद्ध से बच निकलेंगे तथा जीवित रहेंगे वे देखेंगे कि यह ख़ुदा की बातें हैं तथा सर्वशक्तिमान ख़ुदा की बातें सदैव पूरी होकर रहती हैं और कोई शक्ति उन्हें रोक नहीं सकती।

अतः तृतीय विश्वयुद्ध का अन्त इस्लाम के अन्तर्राष्ट्रीय प्रभुत्व का प्रारंभ होगा। तत्पश्चात् बड़ी तीव्रता के साथ इस्लाम सम्पूर्ण विश्व में फैलना आरंभ हो जाएगा तथा लोग बड़ी संख्या में इस्लाम स्वीकार

कर लेंगे और उन्हें ज्ञात हो जाएगा कि केवल इस्लाम ही एक सच्चा धर्म है तथा यह कि मनुष्य की मुक्ति केवल मुहम्मद रसूलुल्लाह के सन्देश द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

अब स्पष्ट है कि पहले जापान और चीन का भविष्यवाणी के अनुसार पूर्वी शक्ति के रूप में क्षितिज पर उदय होना, रूस के राजवंश तथा सत्ता का अन्त, उसके स्थान पर साम्यवाद की स्थापना तथा राजनैतिक सत्ता फिर सम्पूर्ण विश्व में उसका प्रभाव बढ़ जाना, प्रथम विश्व युद्ध जिसने विश्व का नक्शा परिवर्तित कर दिया और फिर द्वितीय विश्व युद्ध जिसने दोबारा विश्व का नक़्शा परिवर्तित कर दिया, ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाएं हैं जो मानव इतिहास में मील के पत्थर का स्थान रखती हैं। यह सभी घटनाएं उसी प्रकार घटित हुईं जिस प्रकार उनकी पहले से सूचना दी गई थी।

स्मरण रखना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने उद्देश्य को पूर्ण करके 26, मई 1908 ई. को अपने ख़ुदा के समक्ष उपस्थित हो गए। इन समस्त भविष्यवाणियों का इस से पूर्व ही उच्च स्तर पर प्रकाशन हो चुका था। अतएव यह बात निश्चित है कि इस्लाम की विश्वव्यापी विजय एवं प्रभुत्व के विषय में जो भविष्यवाणियां की गई हैं वे अपने समय पर अवश्य पूरी होंगी, क्योंकि ये भविष्यवाणियां एक ही श्रृंखला की विभिन्न कड़ियां हैं।

यह भी स्मरण रहे कि इस्लाम की विजय तथा इस्लामी प्रभात के उदय होने के लक्षण प्रकट हो रहे हैं यद्यपि अभी धुंधले हैं परन्तु अब भी उनको देखा जा सकता है। इस्लाम का सूर्य अपनी पूर्ण आभा एवं चमक के साथ उदय होगा तथा विश्व को प्रकाशित करेगा, किन्तु

इससे पूर्व कि यह सब कुछ घटित हो आवश्यक है कि विश्व एक ऐसे विश्वव्यापी विनाश से गुज़रे, एक ऐसा रक्तरंजित विनाश जो मानव जाति को झंझोड़ कर रख देगा। परन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि यह एक भयावह भविष्यवाणी है। भयावह भविष्यवाणी प्रायश्चित तथा क्षमायाचना करने से स्थगित भी की जा सकती है अपितु टल भी सकती हैं। यदि मनुष्य अपने प्रतिपालक की ओर झुके, प्रायश्चित करे तथा अपने आचरण ठीक कर ले तो वह अब भी ख़ुदा के प्रकोप से बच सकता है। यदि वह धन-सम्पत्ति और शक्ति और श्रेष्ठता के झूठे ख़ुदाओं की उपासना को त्याग दे और अपने प्रतिपालक से सच्चा संबंध स्थापित करे, दुराचारों से पृथक हो जाए, वह ख़ुदा तथा मनुष्यों के प्रति कर्त्तव्यों एवं अधिकारों को पूरा करे तथा मानव जाति का वास्तविक हितैषी बन जाए, किन्तु उसकी निर्भरता तो उन जातियों पर है जो इस समय शक्ति, धन तथा जातीय श्रेष्ठता के नशे में मस्त हैं कि क्या वे इस मस्ती को त्याग कर आध्यात्मिक आनन्द तथा हर्ष के अभिलाषी हैं अथवा नहीं ? यदि संसार ने सांसारिक मस्तियां तथा अश्लील बातें न त्यागीं तो फिर यह भयावह भविष्यवाणियां अवश्य पूरी होंगी तथा संसार की कोई शक्ति और कोई कृत्रिम ख़ुदा संसार को कथित भयंकर विनाश से बचा न सकेगा।

अतः स्वयं पर तथा अपनी सन्तानों पर दया करें तथा कृपालु और दयालु ख़ुदा की पुकार को सुनें। अल्लाह तआला आप पर दया करे और सच्चाई को स्वीकार करने तथा उससे लाभान्वित होने का सामर्थ्य प्रदान करे।

अब मैं संक्षिप्त तौर पर उस आध्यात्मिक क्रान्ति का वर्णन करता

हूं जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान आध्यात्मिक पुत्र के द्वारा संसार में प्रकट होनी थी।

किन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि आप के प्रादुर्भाव के युग में इस्लाम अत्यन्त विवशता तथा अवनति की अवस्था में था। मुसलमानों के पास विद्या न थी, धन से वे वंचित थे, उद्योग एवं व्यवसाय में उनका कोई स्थान न था, व्यापार उन के हाथ से निकल चुका था, राजनैतिक सत्ता वे खो चुके थे तथा वास्तविक अर्थों में तो संसार के किसी भाग में वे सत्ताधारी अधिकारी न रहे थे, आचरण बहुत गिर चुके थे तथा पराजित मानसिकता उन में उत्पन्न हो चुकी थी और पुनः उठने तथा सजीव जातियों की पंक्ति में खड़े होने की कोई उमंग उनमें शेष न रही थी, इस्लाम के विरोध की यह अवस्था थी कि विश्व की सम्पूर्ण शक्तियां इस्लाम पर आक्रमणकारी हो रही थीं तथा इस्लाम को सिर छिपाने के लिए कहीं स्थान न मिल रहा था। इस विरोध में ईसाई धर्म सब से अग्रसर था तथा यह धर्म इस्लाम का सब से बड़ा शत्रु था। ईसाई प्रचारक प्रचुर संख्या में संसार में फैल गए थे। ईसाई जगत का धन तथा सत्ता इन प्रचारकों की सहायता के लिए हर समय तैयार थी। उनका प्रथम तथा भरपूर आक्रमण इस्लाम के विरुद्ध था उसे अपनी विजय का इतना विश्वास था कि एक समय ऐसा भी आया कि संसार में घोषणा की गई कि :

(1) अफ्रीका महाद्वीप ईसाइयत की जेब में है।

(2) हिन्दुस्तान में मुसलमान देखने को भी न मिलेगा।

(3) समय आ गया है कि मक्का पर ईसाइयत का झण्डा लहराएगा।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम की अपनी दशा यह थी कि अभी गिनती के कुछ निर्धन मुसलमान आप के पास एकत्र हुए थे, कोई गुट, कोई धन, कोई राजनैतिक शक्ति आप के पास न थी किन्तु वह जिसके अधिकार में प्रत्येक है आप के साथ था तथा उसी ख़ुदा ने आप से यह कहा कि संसार में यह घोषणा कर दो कि इस्लाम के फलने-फूलने के दिन आ गए हैं तथा वे दिन दूर नहीं जब इस्लाम विश्व के समस्त धर्मों पर अपने तर्कों तथा अपने आध्यात्मिक प्रभावों की दृष्टि से विजयी होगा।

आगे चलने से पूर्व एक बात को स्पष्ट कर दूं कि इस्लाम हमें यह सिखाता है और हम समस्त मुसलमानों की यह आस्था है कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम ख़ुदा के एक चुने हुए नबी थे तथा उनकी माता भी सदाचार में एक पवित्र आदर्श थीं। पवित्र क़ुर्आन ने उन दोनों का वर्णन सम्मानपूर्वक किया है। हज़रत मरयम को तो पवित्र क़ुर्आन ने पवित्रता के उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत किया है तथा पवित्र क़ुर्आन में आप की चर्चा इंजील की अपेक्षा अधिक सम्मान के साथ की गई है, परन्तु पवित्र क़ुर्आन इन दोनों को उपास्य स्वीकार करने की कलेसियाई आस्था का कठोरता से खण्डन करता है। यह बात तथा ईसाई चर्च का हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई से इन्कार दो ऐसी बातें हैं जो इस्लाम और ईसाइयत के मध्य आधारभूत एवं सैद्धान्तिक तौर पर मतभेद रखती हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कथन है :

"मैं प्रतिक्षण इसी चिन्ता में हूं कि हमारा और ईसाई धर्म का

किसी प्रकार से निर्णय हो जाए। मेरा दिल मुर्दा परस्ती के उपद्रव से आहत होता जाता है और मेरे प्राण बड़े विचित्र संकट में हैं। इस से बढ़कर और कौन सी हार्दिक पीड़ा का स्थान होगा कि एक असहाय मनुष्य को ख़ुदा बना लिया गया तथा कमज़ोर मनुष्य को समस्त ब्रह्माण्ड का प्रतिपालक समझा गया। मैं इस शोक से कभी का समाप्त हो जाता यदि मेरा स्वामी तथा मेरा सर्वशक्तिमान ख़ुदा मुझे सांत्वना न देता कि अन्ततः विजय एकेश्वरवाद की है। ख़ुदा के अतिरिक्त उपास्य मरेंगे तथा मिथ्या ख़ुदा अपने ख़ुदा होने के अस्तित्व से पृथक किए जाएंगे। मरयम के उपास्यमय जीवन पर मृत्यु आएगी तथा उसका पुत्र अब अवश्य मरेगा। सर्वशक्तिमान ख़ुदा का कथन है कि यदि मैं चाहूं तो मरयम और उसके पुत्र ईसा तथा सम्पूर्ण भूमण्डल निवासियों को नष्ट कर दूं। अतः अब उसने यही इच्छा की है कि इन दोनों के मिथ्या उपास्यमय जीवन को मृत्यु का स्वाद चखाए। इसलिए अब दोनों पर मृत्यु आएगी कोई उन्हें बचा नहीं सकता और उन समस्त दूषित प्रवृत्तियों पर भी मृत्यु आएगी जो झूठे ख़ुदाओं को स्वीकार कर लेती थीं। नई पृथ्वी होगी तथा नया आकाश होगा अब वे दिन निकट आते हैं कि सच्चाई का सूर्य पश्चिम की ओर से चढ़ेगा और यूरोप को सच्चे ख़ुदा का पता लगेगा। तत्पश्चात् तौबा का द्वार बन्द होगा क्योंकि प्रवेश करने वाले बड़ी तीव्रता से प्रवेश कर जाएंगे तथा वही शेष रह जाएंगे जिनके दिल के द्वार स्वाभाविक तौर पर बन्द हैं। वे प्रकाश से नहीं अपितु अंधकार से प्रेम रखते हैं। निकट है कि इस्लाम के अतिरिक्त सभी मिल्लतें नष्ट हो जाएंगी। समस्त शस्त्र टूट जाएंगे परन्तु इस्लाम का आकाशीय शस्त्र न टूटेगा न मन्द

होगा जब तक 'दज्जालियत' को टुकड़े-टुकड़े न कर दे। वह समय निकट है कि ख़ुदा का सच्चा एकेश्वरवाद जिस को जंगलों के रहने वाले तथा समस्त विद्याओं से अनभिज्ञ भी अन्तःकरण में महसूस करते हैं देशों में फैलेगा। उस दिन न कोई बनावटी 'कफ़्फ़ारा' शेष रहेगा और न कोई बनावटी ख़ुदा। ख़ुदा का एक ही हाथ कुफ्र की समस्त योजनाओं को ध्वस्त कर देगा किन्तु न किसी तलवार से तथा न किसी बन्दूक से अपितु तत्पर आत्माओं को प्रकाश प्रदान करने से तथा पवित्र दिलों पर एक प्रकाश उतारने से। तब ये बातें जो मैं कहता हूं समझ में आ जाएंगी।"

(तब्लीग़-ए-रिसालत, जिल्द-6, पृष्ठ - 8,9)

इन ज़बरदस्त भविष्यवाणियों के पश्चात् तो संसार का रूप ही परिवर्तित हो गया। अफ्रीका का विशाल महाद्वीप ईसाइयत के झण्डे के नीचे एकत्र होने के स्थान पर इस्लाम की शीतल तथा आनन्ददायक छत्र-छाया में एकत्र हो रहा है। हिन्दुस्तान में यह स्थिति है कि अहमदी युवाओं से वार्तालाप करते हुए भी बड़े-बड़े पादरी घबराते हैं तथा मक्का पर ईसाइयत का झण्डा लहराने का स्वप्न पूरा न हुआ और न कभी होगा। इन्शाअल्लाह।

इस्लाम के प्रभुत्व के विषय में जो शुभ सन्देश दिए गए थे, उनके पूरा होने के लक्षण प्रकट हो रहे हैं, किन्तु जैसा कि मैं पहले बता चुका हूं एक तीसरे विश्वव्यापी विनाश की भी सूचना दी गई है जिसके पश्चात् इस्लाम पूरी प्रतिष्ठा एवं वैभव के साथ संसार पर विजयी होगा, परन्तु साथ ही यह शुभ सूचना भी दी गई है कि प्रायश्चित तथा इस्लाम के निर्दिष्ट मार्ग अपना लेने से यह विनाश

टल भी सकता है। अब यह आपके अधिकार में है कि अपने ख़ुदा की पहचान तथा उसके साथ सच्चा सम्बन्ध पैदा करके स्वयं को और अपनी सन्तानों को उस विनाश से बचा लें या उस से दूरी का मार्ग अपनाकर स्वयं को तथा अपनी सन्तानों को विनाश में डालें। डराने वाले महान पुरुष ने ख़ुदा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम पर (निम्नलिखित शब्दों में) आपको डराया है और अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया है। मेरी यह दुआ है कि ख़ुदा तआला आप को अपना कर्त्तव्य पूरा करने का सामर्थ्य प्रदान करे। मैं अपना भाषण उस महान व्यक्ति के अपने शब्दों पर समाप्त करता हूं :-

"स्मरण रहे कि ख़ुदा ने मुझे सामान्य तौर पर भूकम्पों की सूचना दी है। अत: नि:सन्देह समझो कि जैसा कि भविष्यवाणी के अनुसार अमरीका में भूकम्प आए, ऐसे ही यूरोप में भी आए और इसके अतिरिक्त एशिया में विभिन्न स्थानों पर आएंगे और कुछ उनमें से प्रलय का रूप होंगे तथा इतनी अधिक मात्रा में मौतें होंगी कि रक्त की नहरें चलेंगी। इस मृत्यु से पशु-पक्षी भी बाहर नहीं होंगे। पृथ्वी पर इस प्रकार भयानक विनाश आएगा कि उस दिन से जिस दिन मनुष्य का इस पृथ्वी पर जन्म हुआ ऐसा विनाश कभी नहीं आया होगा। अधिकांश स्थान उथल-पुथल हो जाएंगे कि मानो उनमें कभी आबादी न थी। उसके साथ अन्य विपत्तियां भी पृथ्वी और आकाश में बहुत भयंकर रूप में जन्म लेंगी, यहां तक कि प्रत्येक बुद्धिमान की दृष्टि में वे बातें असाधारण हो जाएंगी तथा खगोलशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र की पुस्तकों के किसी पन्ने में उनका पता नहीं मिलेगा। तब मनुष्यों में व्याकुलता उत्पन्न होगी कि यह क्या होने

वाला है। बहुत से लोग मुक्ति पाएंगे तथा बहुत से विनाश का शिकार हो जाएंगे। वे दिन निकट हैं अपितु मैं देखता हूं कि द्वार पर हैं कि विश्व एक प्रलय का दृश्य देखेगा और न केवल भूकम्प अपितु और भी भयभीत करने वाली विपत्तियां प्रकट होंगी। कुछ आकाश से और कुछ पृथ्वी से। यह इसलिए कि मानवजाति ने अपने ख़ुदा की उपासना को त्याग दिया है तथा पूर्ण हृदय, पूर्ण साहस और पूर्ण विचारों से संसार पर ही गिर गए हैं। यदि मैं न आया होता तो इन विपत्तियों में कुछ विलम्ब हो जाता, परन्तु मेरे आने के साथ ख़ुदा के प्रकोप के वे गुप्त इरादे जो एक लम्बे समय से गुप्त थे प्रकट हो गए। जैसा कि ख़ुदा तआला का कथन है :-

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا

और प्रायश्चित करने वाले शान्ति पाएंगे और वे जो विपत्ति के आने से पहले डरते हैं उन पर दया की जाएगी। क्या तुम यह विचार करते हो कि तुम इन भूकम्पों से सुरक्षित रहोगे या तुम अपनी चेष्टाओं से स्वयं को बचा रख सकते हो ? कदापि नहीं। मानव कार्यों का उस दिन अन्त होगा। यह मत विचार करो कि अमरीका इत्यादि में भयानक भूकम्प आए और तुम्हारा देश उन से सुरक्षित है। मैं तो देखता हूं कि शायद उनसे कहीं अधिक संकटों का मुँह देखोगे। हे यूरोप ! तू भी अमन में नहीं और हे एशिया ! तू भी सुरक्षित नहीं, हे द्वीपों के निवासियो ! कोई बनावटी ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूं और आबादियों को वीरान (निर्जन) पाता हूं। वह अद्वितीय ख़ुदा एक समय तक मौन रहा तथा उसकी आंखों के सामने घृणित कार्य किए गए और वह चुप रहा, किन्तु अब वह

प्रताप के साथ अपना चेहरा दिखाएगा। जिसके कान सुनने के हों सुने कि वह समय दूर नहीं। मैंने प्रयत्न किया कि ख़ुदा की सुरक्षा के नीचे सब को एकत्र करूं परन्तु अवश्य था कि भाग्य के लिखे पूरे होते। मैं सच-सच कहता हूं कि इस देश की बारी भी निकट आती जाती है। नूह का युग तुम्हारी आंखों के सामने आ जाएगा और लूत की धरती की घटना तुम अपनी आंखों से स्वयं देख लोगे, परन्तु ख़ुदा प्रकोप में धीमा है। प्रायश्चित करो ताकि तुम पर दया की जाए। जो ख़ुदा को त्याग देता है वह एक कीड़ा है न कि मनुष्य, तथा जो उस से नहीं डरता वह मुर्दा है न कि ज़िन्दा।"

(हक़ीक़तुल वह्यी पृष्ठ - 256-257)

وآخر دعوٰنا ان الحمد للّٰہِ ربّ العٰلَمین